ज़ुल हिज्जा के पहले १० दिनों के आमाल

MUHAMMADIYAH
PUBLICATIONS

ज़ुल हिज्जा के पहले दस दिनों के फ़ज़ाइल

सब प्रशंसा अल्लाह سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى केलिए है और वह हमारे नबी मुहम्मद ﷺ को हर हानि से सुरक्षित रखें और उन के पद को और बढ़ा दे और उन के अहले बैत और सहाबा के पद को भी पढ़ा दे

इब्न अब्बास رضي الله عنه ने बताया कि नबी ﷺ ने यह कहा:
अल्लाह سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى के यहां और किसी दिन अच्छे आमाल इतने प्रिय नहीं होते जितने कि इन दिनों होते हैं; अर्थात ज़ुल हिज्जा के पहले दस दिन। पूछा गया क्या जिहाद भी नहीं? आप ने फ़रमाया: नहीं, अल्लाह के रास्ते में जिहाद भी नहीं सिवाय ऐसे पुरुष के जो अकेला जिहाद केलिए गया हो और अपनी जान और माल लुटा दे और खाली हाथ वापिस आए।

एक दूसरी रिवायत में इब्न उमर رضي الله عنه नबी ﷺ से रिवायत करते हैं: अल्लाह के यहां अच्छे आमाल इतने प्रिय और किसी दिन नहीं होते हैं जितने कि इन दस दिनों में होते हैं। इसी लिए तहलील (ला इलाहा इल्लल्लाह), तकबीर (अल्लाहु अकबर), तहमीद (अल्हम्दुलिल्लाह) पढ़ते रहो। (इमाम अहमद)

जाबिर नबी ﷺ से रिवायत करते हैं: सब से बेहतरीन दिन अराफात का दिन है। ऐसे कोई दिन नहीं जिन में अच्छे काम अल्लाह को इतने प्रिय लगते हैं जितने कि इन दस दिनों में लगते हैं। इसी लिए ज्यादा से ज्यादा तहलील (ला इलाहा इल्लल्लाह), तकबीर (अल्लाहु अकबर), तहमीद (अल्हम्दुलिल्लाह) पढ़ते रहो।

इन दिनों में दस चीजों का ध्यान रखा जाए

यह जानना चाहिए कि इबादत के लिए इन दस दिनों की प्राप्ति होना अल्लाह سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى की अपने बन्दे पर बड़ी रहमत है जिस का भरपूर पालन करना चाहिए। यह मुसल्मान का कर्तव्य है कि वह इस रहमत की कदर करे और इस का अधिक फ़ायदा उठाए, उन दस दिनों में ज्यादा से ज्यादा इबादत करे। अल्लाह की नेमतों में से यह भी एक नेमत है कि उन ने हमें अच्छे काम और इबादत करने के लिए अनेक तरीके दिए हैं ताकि मुसल्मान खुद को अपने रब की इबादत में लगातार व्यस्त रखें।

वे अच्छे काम जो एक मुसल्मान को ज़ुल हिज्जा के उन पहले दस दिनों में करने चाहिएं वे ये हैं:

पहला:

हज और उमरा अदा करना, जो कि सब आमाल में बेहतरीन हैं। इस के फ़ज़ाइल नबी की अनेक हदीसों में बताए गए हैं। नबी ﷺ फरमाते हैं: एक उमरा अदा करने से बीच के सब गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं। और सही तरह से किए हुए हज का बदला सिवाय जन्नत के कुछ नहीं है। इसी प्रकार की और हदीसें भी आई हैं।

दूसरा:
इन सारे दिनों या कुछ दिनों में रोज़ा रखना खास कर अराफात के दिन का रोज़ा रखना। इस में कोई संदेह नहीं कि रोज़ा रखना बेहतरीन आमाल में आता है; बल्कि यह एक ऐसा अमल है जिस के संबंध में खुद अल्लाह سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى फरमाता है, हदीसे क़ुदसी है: रोज़ा मेरे लिए है, और इस का बदला मैं खुद ही दूं गा। मेरा बन्दा मेरे लिए अपनी इच्छाएं, भोजन, और पियास पर नियंत्रण बनाए रखता है।

अबू सईद खुजरी رضي الله عنه अल्लाह के नबी ﷺ की हदीस रिवायत करते हैं: अल्लाह का कोई बन्दा जो केवल अल्लाह केलिए रोज़ा रखता है तो आखरत में अल्लाह उस के और आग के बीच में सत्तर वर्षों की दूरी कर देगा। (मुत्तफ़िक़ अलैहि)

अबू क़तादा رضي الله عنه अल्लाह के नबी ﷺ की हदीस रिवायत करते हैं: अराफात के दिन का रोज़ा रखने पर अल्लाह पिछले वर्ष के गुनाहों को क्षमा कर देता है और वे गुनाह भी जो अगले वर्ष हो सकते हैं। (इमाम मुस्लिम)

तीसरा:
इन दिनों तकबीर पढ़ना और ज़िक्र करते रहना जैसा कि अल्लाह سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى ने बताया है: और अल्लाह के ज़िक्र में गिनती के ये कुछ दिन गुजारा करो [अल-बक़रह २:२०३]

ये कुछ दिन ज़ुल हिज्जा के पहले दस दिन होते हैं। इसी लिए उलमा इन दिनों में ज़िक्र करने का कहते हैं, एक रिवायत है कि इब्न उमर और अबू हुरैरा رضي الله عنهما ज़ुल हिज्जा के पहले दस दिनों में बाजारों में ऊंची आवाज में तकबीर पढ़ा करते गुजरते थे और लोग भी उन को देखा देखी तकबीर पढ़ते जाते थे। इसहाक رحمه الله रिवायत करते हैं कि उलमा ज़ुल हिज्जा के पहले दस दिनों में यह पढ़ा करते थे: अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इलाहा इल्लल्लाह, वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, व लिल्लाहिल हम्द। इस के बारे में कहा गया है कि इसे बाजारों, घरों, सड़कों, और मस्जिदों आदि में पढ़ा जाए। जैसा कि अल्लाह की आज्ञा है: अल्लाह की दी हुई हिदायत पर उस की बड़ाई प्रकट करो और ताकि तुम कृतज्ञ बनो। [अल-बक़रह २:१८५]

चौथा:

तौबा करना और अल्लाह की आज्ञाओं का उल्लंघन करने और सब गुनाहों से बचना ताकि प्रायश्चित के साथ साथ अल्लाह की रहमत भी प्राप्त हो। अल्लाह की आज्ञाओं का उल्लंघन करने से अल्लाह से दूरी होती है जबकि पालन करने से अल्लाह سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى की रहमत प्राप्त होती है। अबू हुरैरा رضي الله عنهما कहते हैं की नबी ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह भी क्रोधित होता है और अल्लाह का क्रोध तब जागता है जब बन्दा अल्लाह के नियम तोड़ता है (मुत्तफ़िक़ अलैहि)

पांचवां:

नेकी के कामों में बढ़ चढ़ कर भाग लेना जैसे: नमाज़, ज़कात, जिहाद, क़ुरआन की तिलावत करना, अच्छे कामों से प्रसन्न होना और बुराई से रुकना, आदि; ऐसे सब आमाल का सवाब इन दिनों में कई गुना हो जाता है। इन दिनों में आमाल को उन की चरम सीमा तक ले जाया जा सकता है और अल्लाह को इस समय के आमाल दूसरे सब आमाल से प्रिय लगते हैं जिस में सब से बेहतरीन अमल जिहाद भी शामिल है सिवाय उस के जो अपने माल और घोड़े दोनों से जाए।

छठा:

शरीयत में यह अनुमति दी गई है कि ईद की नमाज़ तक कि दिन और रात हर समय तकबीर पढ़ी जाए। जबकि फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद तकबीर पढ़ने की आज्ञा दी गई है। लेकिन जो लोग हाजी नहीं हैं तो उन केलिए तक्बिरें अराफात के दिन से शुरू होती हैं और जो हाजी हैं उन केलिए क़ुरबानी के दिन दोपहर की नमाज़ से शुरू हो कर तश्रीक के आखरी दिन की असर नमाज़ पर अंत हो जाती हैं।

सातवां:

क़ुरबानी के दिन और तश्रीक के दिनों में जानवर की भेंट देना। यह इब्राहीम عليه السلام की वह सुन्नत है जब अल्लाह ने इब्राहीम के बेटे के बदले में एक बड़े मेढ़े को क़ुर्बान करवाया था। प्रामाणिक रूप से यह बात सही है कि नबी ﷺ ने सींगों वाले दो, काले और सफेद, मेढ़े क़ुर्बान किए थे। उन्हों ने खुद अपने हाथों से उन की बलि दी, और उन पर अल्लाह का नाम पुकारा, और तकबीर पढ़ी, और उन को काटते हुए अपने पैर उन के ऊपर रखे। (मुत्तफ़िक़ अलैहि)

आठवां:

उम्म सलमा رضى الله عنها कहती हैं: जब तुम ज़ुल हिज्जा का नया चांद देखो और तुम में से कोई जानवर क़ुर्बान करना चाहे तो उसे अपने बाल, हाथों के नाखून, या पैरों के नाखूनों को काटने से रुक जाना चाहिए यहां तक के वह अपने जानवर की भेंट दे चूका हो। इस तरह से जो हाजी नहीं हैं उन के और हाजियों के बीच कुछ समानता स्थापित हो जाती है। अल्लाह سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى का फरमान है: और अपने सिर न मूंढों जब तक कि क़ुरबानी अपने ठिकाने न पहुँच जाए [अल-बक़रह १९६] यह रुकना केवल उसी केलिए है जो भेंट देने जा रहा है और किसी केलिए नहीं या जिस का अपना क़ुरबानी का जानवर हो। सिर को धोने में कोई हर्ज नहीं है यदि कुछ बाल गिर भी जाएं तो।

नौवां:

मुसल्मान को ईद की नमाज़ उस की जगह पर सब के साथ अदा करनी चाहिए और ईद का खुत्बह ज़रूर सुनना चाहिए। उसे ईद के लक्ष्य की जानकारी होनी चाहिए, और, कि यह शुक्र का दिन होता है, और अच्छे कर्मों की प्राप्ति का दिन होता है। इस दिन को बिल्कुल भी बुराई, आज्ञा उल्लंघन, या रोकी गई चीजों को करने में व्यस्त नहीं करना चाहिए जैसे गाना बजाना, नाजायज मनोरंजन करना, या शराब पीना आदि। ये सब घिनौने काम सब अच्छे कर्मों को रद्दी कर देते हैं जो आप ने ज़ुल हिज्जा के पहले दस दिनों में किए हों गे।

दसवां:

ऊपर बताई गई सब बातें समझने के बाद हर मुसल्मान, पुरुष हो या स्त्री, सब को ये दिन अल्लाह سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى की याद में और उस की आज्ञाओं का पालन करते हुए गुज़ारना चाहिए, उस को धन्यवाद करना चाहिए, सब फ़र्ज़ आमाल पूरे करने चाहिएं, और इस समय को उस की रहमत प्राप्त करने में लगाना चाहिए। यह केवल अल्लाह سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى ही है जो सफलता देता है और हिदायत वाला रास्ता दिखाता है। अल्लाह नबी, और उन के अहले बैत, और सहाबा को ऊंचा पद प्राप्त करे और उन को हर हानि से सुरक्षित रखे।

ज़ुल हिज्जा के पहले १० दिनों के आमाल

४ रकअत (आसन) नफ़िल (वैकल्पिक) नमाज़

ये नफ़िल नमाज़ रात के अंतिम भाग में अदा करनी चाहिए (तहज्जुद)

हर रकअत में सूरा फातिहा पढ़ें

सूरा फातिहा पढ़ने के बाद ये सब पढ़ें:

• आयतुल कुर्सी (x३)

• सूरतुल इखलास (x३)

• सूरतुल फलक (x१)

• सूरतुन नास (x१)

नफ़िल नमाज़ के बाद कुछ तस्बीह पढ़ें (सुभानल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह आदि..) फिर अल्लाह से दुआ करें।

इन अमल को करने पर इनाम

• हज करने पर इनाम

• प्रिय नबी का दर्शन प्राप्त होना, उन पर दुरूद और सलाम हो

• अल्लाह سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى उस पुरुष / महिला को जो भी उन की जायज इच्छा है प्राप्त करे गा

यदि कोई सब १० रातों को आमाल करे तो उस केलिए अतिरिक्त पुरस्कार है

• उस पुरुष / महिला को जन्नतुल फिरदौस में स्थान मिले गा
• उस पुरुष / महिला के गुनाह माफ़ कर दिए जाएं गे
• वह पुरुष / महिला ऐसे साफ़ हों गे जैसे आज ही पैदा हुए हों

रोज़ा

इन १० मुबारक दिनों में रोज़ा खास तोर पर रखना चाहिए:

• एक अराफात के दिन से पहले और एक अराफात के दिन (आठवें और नौवें दिन)
• जितनी हो सके उतनी इबादत करनी चाहिए
• जितने अच्छे काम हो सकें इन १० दिनों में करने चाहिए
• हर कोई पुरुष / महिला गुनाह वाले कामों से रुक जाए (जैसे संगीत सुनना आदि)

Muhammadiyah House of Wisdom
33 Riding Lane
Hyde, Cheshire
SK14 1NP

(+44) 0161 351 1975

www.zawiyah.org
info@zawiyah.org
zawiyahorg
ShaykhAhmadDabbagh

Hindi